दिनांक :- 24-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज खगड़िया

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्राचीन इतिहास

रेकार्ड :- तृतीय

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- गुप्त काल

पांचवे चरण में समुद्रगुप्त ने कुछ विदेशी राज्यों को पराजित किया।

कुमारगुप्त प्रथम (412-454) ई० - कुमारगुप्त प्रथम की माता का नाम ध्रुवदेवी था। इसने महेन्द्रादित्य की उपाधि ली। कुमारगुप्त ने यद्यपि कोई नई विजय तो नहीं की परंतु साम्राज्य की सीमा को अक्षुण्ण रखने में सफलता पाई। उसके सुव्यवस्थित शासन वर्णन मन्दसोर अभिलेख से मिलता है मन्द

सौर अभिलेख की रचना प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान वत्सभट्टी ने की थी। इसमें कुमारगुप्त के राज्यपाल बन्धुवर्मा का उल्लेख है जो मालवा का गवर्नर था। कुमारगुप्त ने भी अश्वमेध यज्ञ किया था। कुमारगुप्त के निम्नांकित प्रांतीय शासक का उल्लेख मिलता है। चिरादत्त : पुण्ड्रवर्धन भुक्ति का राज्यपाल (दामोदर ताम्रपत्र लेख)

घटोत्कचगुप्त : एरण प्रदेश का शासक (तुमैन अभिलेख)

बन्धुवर्मा : पश्चिम मालवा स्थित दशपुर का राज्यपाल (मंदसौर अभिलेख)

पृथ्वीसेन : अवध प्रदेश का प्रशासक (करमदण्ड अभिलेख)

स्कंदगुप्त के भीतरी स्तंभलेख से ज्ञात होता है कि कुमारगुप्त के समय पुष्यमित्रों का आक्रमण हुआ था। माना जाता है कि इन्ही पुष्यमित्रों के विरुद्ध अभियान में स्कंदगुप्त गया था और जब वह वापस आया तो पिता को मृत पाया।

कुमारगुप्त ने नालंदा महाविहार की स्थापना की थी।

स्कंदगुप्त (455-467 ई०) :- स्कंद गुप्त ने शक्रादित्य की उपाधि ली। जूनागढ़ में उसकी अंतिम तिथि गुप्त संवत 148 दी गई है।

हूणों का प्रथम आक्रमण स्कंदगुप्त के समय हुआ। संभवतः उत्तरी पश्चिम भारत में हूणों के नेता खुशनेवाज को स्कंद गुप्त ने परास्त किया। जूनागढ़ अभिलेख में हूणों को मलेच्छ कहा गया। स्कंदगुप्त के काल में सुराष्ट्र प्रांत का राज्यपाल पर्णदत्त था तथा सुराष्ट्र की राजधानी गिरनार का प्रशासक चक्रपालित था जो कि पर्णदत्त का ही पुत्र था।

स्कंदगुप्त ने ही पर्णदत्त के नेतृत्व में मौर्यकालीन सुदर्शन झील की मरम्मत करवाई। सुदर्शन झील के संदर्भ में निम्नांकित नाम प्रसिद्ध है। (1) चन्द्रगुप्त मौर्य :- पुष्यगुप्त वैश्य (2) अशोक :- तुषाप्प (3) रुद्रदामन :- सुविशाख (4) स्कंदगुप्त :- पर्णदत्त स्कंद के पश्चात गुप्त साम्राज्य का

Scanned with CamScanner

विघटन होने लगा। ५६७ तथा ५७७ के मध्य दो शासक पुरुगुप्त तथा बुद्धगुप्त के स्वर्णमुद्रा पर उसकी उपाधि श्रीविक्रम मिलती है।

(1) मालवा (पूर्वी - मातृविष्णु (2) अन्तर्वेदी (गंगा-यमुना दोआब) सुरश्मिचन्द्र (3) पुण्ड्रवर्धन भुक्ति - ब्रह्मदत्त

बुद्धगुप्त बौद्ध मतानुयायी था (प्रथम गुप्तकालीन शासक) तथा उसने नालंदा महाविहार को धन दान में दिया (ह्वेनसांग) का विवरण। नरसिंहगुप्त बालादित्य उसका उत्तराधिकारी था। उसने हूण नरेश मिहिर कुल को पराजित किया। यह भी बौद्ध मतानुयायी था तथा वसुबंधु का शिष्य था तथापि उसने परमभागवत की भी उपाधि ग्रहण की थी। (नालंदा मुद्रालेख) भानुगुप्त भी एक उल्लेखनीय शासक था। इससे संबंधित ५१० ई० का एरण अभिलेख है जिसमें सती प्रथा का पहला अभिलेखीय प्रमाण उसके एक शासक के संदर्भ में मिलता है जो हूणों के साथ एक युद्ध में

मारा गया था। कुमारगुप्त तृतीय तथा विष्णु गुप्त अन्य शासक थे। इसके बाद गुप्त साम्राज्य का विघटन हो गया।

राजतत्व का सिद्धांत

गुप्त शासकों ने बड़ी-बड़ी उपाधियाँ ली जैसे परमभट्टारक परमेश्वर, महाराजाधिराज आदित्यचन्द्रगुप्त द्वितीय के समय

1) गुप्त शासकों ने अपनी तुलना देवताओं से करती शुरू कर दी। कुषाण शासकों के देवपुत्र उपाधि के विपरीत गुप्त शासकों ने स्वयं देव की उपाधि ग्रहण की। यानि उसने स्वयं को देवता बताया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी तुलना इन्द्र, वरुण, यम तथा कुबेर बाणभट्ट ने इस सिद्धांत का तिरस्कार किया।

गुप्त शासक ही प्रशासन तथा न्याय का मुख्य स्रोत होता था। परंतु केन्द्रीय शासक का जो नियंत्रण मौर्य युग में मिलता दिखता है वह इस युग में नहीं मिलता है। इस काल से विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ने लगी थी। सम्राट को राज-काज में अमात्यों मंत्रियों

तथा अन्य पदाधिकारियों से सहायता मिलती थी। कामंदक के नीति सार में मंत्रियों तथा अमात्यों के बीच के अंतर को स्पष्ट किया गया है। यहाँ मंत्रिपरिषद की भी चर्चा है। कात्यायन स्मृति में अमात्य पद पर नियुक्ति में ब्राह्मणों को को वरीयता देने की बात की गई है।

प्रयाग प्रशस्ति में राजसभा का उल्लेख हुआ है जिसके सदस्य सभ्य कहे जाते थे।

सामान्य प्रथा के अनुसार राजा का बड़ा पुत्र ही उत्तराधिकारी चुना जाता था परंतु अंतिम सत्ता शक्तिशाली राजकुमार को ही प्राप्त होती थी। प्रयाग प्रशस्ति तथा कुमारगुप्त प्रथम के अपराजित किस्म के सिक्कों पर स्पष्ट होता है कि राजा अपने शासन काल में ही अपने उत्तराधिकारी को मनोनीत करता था। युवराज को अधीनता में भी एक पृथक सैनिक विभाग हुआ करता था। इस समय विभिन्न विभाग

तथा उसके सचिवों के अधीन होते थे जो बहुधा वंशानुगत भी हो सकते थे जैसे वीरसेन के उदयगिरी गुहालेख से पता चलता है कि वह अनुवांशिक प्रशासक था।

इस काल में निम्नांकित महत्वपूर्ण अधिकारियों की सूचना गुप्त कालीन अभिलेखों में मिलती है। ① कुमारामात्य :- वर्तमान सर्वोच्च प्रशासनिक पदाधिकारी ② संधि विग्रहक - विदेश मंत्रालय इस अधिकारी की प्रथम चर्चा समुद्रगुप्त के अभिलेख में मिलती है। ③ महादंडनायक ④ महाबलाधिकृत ⑤ महासेनापति ⑥ प्रतिहार - अंतः पुर का रक्षक (क्षत्रियों) ⑦ महाप्रतिहार - राजमहल का रक्षक ⑧ दंडपाशिक - पुलिस विभाग का प्रधान अधिकारी (वर्तमान काल पुलिस अधीक्षक) ⑨ विनयस्थिति स्थापक - धर्म संबंधी मामलों का प्रधानजो सार्वजनिक मंदिरों का प्रबंध करता था तथा लोगों की नैतिक आचरण पर दृष्टि रखता था।

Scanned with CamScanner